19 अध्याय

1857 ई. का विद्रोह

इस अध्याय में आप सीखेंगे कि:

- 1857 ई. की क्रांति के विभिन्न कारण क्या थे। विद्रोह का प्रारम्भ कब, कैसे और कहाँ हुआ। और किस प्रकार इस विद्रोह ने एक राष्ट्रीय स्वरूप ग्रहण कर लिया।
- विद्रोह के असफलता के कारण क्या थे और विद्रोह के बाद उसके परिणाम क्या हुए और कौन-कौन से प्रशासनिक परिवर्तन किये गए।
- विद्रोह में विभिन्न वर्गों की भूमिका और विद्रोह का स्वरूप क्या था।

परिचय (Introduction)

1857 ई. का विद्रोह सैनिकों के असन्तोष का परिणाम मात्र नहीं था। वास्तव में, यह औपनिवेशिक शासन के चरित्र, उसकी नीतियों तथा उसके कारण कम्पनी के शासन के प्रति जनता में संचित असन्तोष का परिणाम था। इस विद्रोह के कारण निम्नलिखित हैं—

राजनीतिक कारण

1803 ई. से ही मुगल सम्राट ब्रिटिश संरक्षण में रहने लगा था, परंतु मान-मर्यादा सम्बन्धित उसके दावे स्वीकृत थे। इसके अतिरिक्त कैनिंग ने 18 56 ई. में घोषणा की, कि बहादुरशाह के उत्तराधिकारी सम्राट नहीं बल्कि शहज़ादों के रूप में जाने जाएँगे। मुगल बादशाह चूँकि भारतीय जनता का प्रतिनिधित्व करता था, इसलिए उसके अपमान में जनता ने अपना अपमान महसूस किया और विद्रोह के लिए मजबूर हुए। डलहौज़ी ने अपनी व्यपगत नीति द्वारा जैतपुर, सम्भलपुर, झाँसी, नागपुर आदि राज्यों का ब्रिटिश साम्राज्य में विलय कर लिया, साथ ही अवध के नवाब को गद्दी से उतार दिया, भूतपूर्व पेशवा की पेन्शन जब्त कर ली। ये सभी कारण व्यापक असन्तोष फैलाने के लिए पर्याप्त थे। डलहौज़ी ने तन्जौर और कर्नाटक के नवाबों की राजकीय उपाधियाँ जब्त कर ली। मुगल बादशाह को लाल किला छोड़कर कुतुबमीनार के पास रहने का आदेश आदि ने आंदोलन को संभाव्य बना दिया।

आर्थिक कारण

भारत में कम्पनी की सभी नीतियों के मूल में भारत का आर्थिक शोषण कर अपना मुनाफा बढ़ाना था। प्लासी के युद्ध के बाद निरंतर भारत का शोषण होता रहा जो शायद जन असंतोष का सबसे महत्वपूर्ण कारण था। स्थायी बन्दोबस्त, रैयतवाड़ी व्यवस्था और महालवाड़ी व्यवस्था द्वारा किसानों का जबरदस्त शोषण हुआ और वे निर्धनता के कुचक्र में फँस गए। आर्थिक शोषण और उसके पारम्परिक आर्थिक ढाँचे के पूर्णतया विनाश ने किसानों, दस्तकारों, हस्तशिल्पकारों तथा बड़ी संख्या में परम्परागत ज़मींदारों को दरिद्र बना दिया। अंततः आर्थिक असंतोष ने विद्रोह का रूप ले लिया।

सामाजिक-धार्मिक कारण

कम्पनी की विभिन्न नीतियों से भारतीयों में इस भावना को बल मिला कि उनकी सभ्यता एवं संस्कृति खतरे में है। ईसाई मिशनरियों के धर्म-प्रचार से इस भावना को और बल मिला। सामाजिक-धार्मिक कुरीतियां(जैसे-सती प्रथा, कन्या वध, बाल विवाह का निषेध एवं विधवा विवाह के सम्बन्ध में बनाए गए कानूनों को भी लोगों ने अपनी व्यवस्था पर आघात माना। 1856 ई. के धार्मिक निर्योग्यता अधिनियम द्वारा ईसाई धर्म ग्रहण करने वाले लोगों को अपनी पैतृक सम्पत्ति का हकदार माना गया, साथ ही उन्हें नौकरियों में पदोन्नति, शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश की सुविधा प्रदान की गई। अंग्रेज़ों की इन नीतियों ने भारतीयों को अन्ततः विद्रोह के लिए मानसिक रूप से तैयार कर दिया।

सैनिक कारण

1857 ई. के विद्रोह के सैनिक कारणों में अनेक ऐसे कारण थे, जिन्होंने इस विद्रोह की पृष्ठभूमि तैयार की। अंग्रेज़ी सेना में कार्यरत भारतीय सैनिकों में अधिकांश कनिष्ठ अफसर थे, उन्हें पदोन्नति का कोई फायदा नहीं दिया जाता था। पदोन्नति से वंचित किया जाना, वेतन की न्यून मात्र, भारत की सीमाओं से बाहर युद्ध के लिए भेजा जाना तथा समुद्रपार भत्ता न देना आदि ऐसे कारण थे, जिन्होंने भारतीय सैनिकों में असन्तोष को जन्म दिया और वे विद्रोह के लिए विवश हुए। कैनिंग की सरकार ने 1856 ई. में सेना भर्ती अधिनियम पारित किया। इस अधिनियम के अनुसार सभी सैनिकों को यह स्वीकार करना पड़ता था कि जहाँ कहीं आवश्यकता होगी, उन्हें वहाँ कार्य करना होगा अर्थात् वे समुद्रपार जाने से मना नहीं कर सकते थे।

तात्कालिक कारण

चर्बी लगे कारतूसों के प्रयोग को 1857 ई. के विद्रोह का तात्कालिक कारण माना जाता है। कैनिंग सरकार ने 1857 ई. में सैनिकों के प्रयोग के लिए पुरानी लोहे वाली बन्दूक ब्राउन बैस के स्थान पर इनफिल्ड रायफल का प्रयोग प्रारंभ करवाया, जिसमें कारतूसों को लगाने से पूर्व उसे दाँतों से खींचना पड़ता था। चूँकि कारतूसों में गाय और सुअर दोनों की चर्बी लगी होती थी, इसलिए हिन्दू और मुसलमान दोनों भड़क उठे, जिसके परिणामस्वरूप 1857 ई. के विद्रोह की शुरूआत हुई। चर्बीयुक्त कारतूसों के प्रयोग के विरुद्ध पहली घटना 29 मार्च, 1857 को बैरकपुर की छावनी में घटी, जहाँ मंगल पाण्डे नामक एक सैनिक ने चर्बी लगे कारतूस के प्रयोग से इनकार करते हुए अपने अधिकारी लेफ्टिनेंट बाग और लेफ्टिनेण्ट जनरल ह्यूसन की हत्या कर दी।

चित्र 19.1: सिपाही विद्रोह

विद्रोह का प्रारम्भ (Start of the Revolt)

24 अप्रैल, 1857 को मेरठ में तैनात देशी घुड़सवार सेना के 99 सिपाहियों ने चर्बी वाले कारतूस का प्रयोग करने से इनकार कर दिया। इनमें से 85 सैनिकों को 10 वर्ष की सजा सुनाई गई। इसके विरोध में 10 मई, 1857 को मेरठ के भारतीय सैनिकों ने विद्रोह कर अपने साथियों को छुड़ा लिया तथा दिल्ली की ओर कूच किया। 12 मई, 1857 को दिल्ली पर अधिकार करके विद्रोहियों ने मुगल शासक को अपना नेता स्वीकार किया।

1857 ई. से पूर्व किए गए विद्रोह

- 1806 ई. में वेल्लोर में विद्रोह।
- 1824 ई. में बैरकपुर छावनी में दोहरे भत्ते के बिना रंगून जाने के प्रश्न पर उपद्रव।
- 1824 ई. बैरकपुर 47वीं रेजिमेण्ट में बर्मा जाने के विरुद्ध।
- 1825 ई. असम स्थित तोपखाने के विद्रोह।
- 1830 ई. शोलापुर में वेतन भत्ते के लिए विद्रोह।
- 1849 ई. 22वें एनआई (नेशनल इन्फेण्ट्री) विद्रोह।
- 1850 ई. 66वें एनआई (नेशनल इन्फेण्ट्री) विद्रोह।
- 1852 ई. 38वें एनआई (नेशनल इन्फेण्ट्री) विद्रोह।

विद्रोह का विस्तार (Expansion of Revolt)

1857 ई. का विद्रोह मेरठ से प्रारम्भ होकर भारत के अन्य भागों में तेज़ी से फैल गया। शीघ्र ही विद्रोही अपने उच्चाधिकारियों की हत्या कर दिल्ली की ओर रवाना हो गए। 11 मई को प्रात: विद्रोहियों ने दिल्ली पर अधिकार कर मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर द्वितीय को पुन: भारत का सम्राट और विद्रोहियों का नेता घोषित कर दिया। दिल्ली पर विजय का समाचार समूचे देश में फैल गया। देखते-ही-देखते विद्रोह ने अपनी चपेट में कानपुर, लखनऊ, बरेली, जगदीशपुर (बिहार), झाँसी, अलीगढ़, रूहेलखण्ड, इलाहाबाद, ग्वालियर आदि को ले लिया, जबकि बंगाल के ज़मींदारों ने विद्रोह को कुचलने में अंग्रेज़ों की मदद की थी तथा इस विद्रोह में व्यापारियों, पढ़े-लिखे लोगों तथा शासकों ने हिस्सेदारी नहीं की थी।

विद्रोह के प्रमुख केन्द्र

कानपुर—5 जून, 1857 को विद्रोह की शुरूआत हुई। यहाँ पर पेशवा बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र नाना साहब (धोंधू पन्त) ने विद्रोह को नेतृत्व प्रदान किया, जिसमें उनकी सहायता ताँत्या टोपे ने की। नाना साहब लगातार पराजयों को झेलते हुए अन्तत: नेपाल चले गए, जहाँ से वे जीवन की अन्तिम साँस तक अंग्रेज़ों से लड़ते रहे।

दिल्ली—82 वर्षीय बहादुरशाह ने बख्त खाँ के सहयोग से विद्रोह को नेतृत्व प्रदान किया। 20 सितम्बर, 1857 को बहादुरशाह ने हुमायूँ के मकबरे में अंग्रेज़ लेफ्रिटनेंट डब्ल्यू.एस.आर. हडसन के समक्ष समर्पण कर दिया। अंग्रेज़ों ने बहादुर शाह को निर्वासित कर रंगून भेज दिया जहाँ 1862 ई. में उनकी मृत्यु हो गई।

लखनऊ—30 मई, 1857 को विद्रोह की शुरूआत हुई। बेगम हजरत महल ने अपनी अल्पायु पुत्र बिरजिस कादिर को नवाब घोषित किया तथा लखनऊ

स्थित ब्रिटिश रेजीडेन्सी पर आक्रमण किया। लखनऊ के बाद बेगम हजरत महल ने मौलवी अहमदुल्ला के साथ शाहजहाँपुर में भी विद्रोह को नेतृत्व प्रदान किया। वे शीघ्र पराजित हो गईं और भागकर नेपाल चली गईं, जहाँ उनकी गुमनाम मौत हो गई।

झाँसी—4 जून, 1857 को रानी लक्ष्मीबाई के नेतृत्व में विद्रोह की शुरूआत हुई, जिसमें रानी ने अपनी साहसी नेतृत्व में अंग्रेज़ों के साथ वीरतापूर्वक युद्ध किया, परन्तु झाँसी के पतन के बाद रानी लक्ष्मीबाई ग्वालियर की ओर प्रस्थान कर गईं। यहाँ सिन्धिया अंग्रेज़ों का समर्थक था, लेकिन उसकी सेना विद्रोहियों के साथ मिल गई जिसकी सहायता से रानी ने ग्वालियर पर अधिकार कर लिया। रानी लक्ष्मी बाई की मृत्यु पर जनरल ह्यूरोज ने कहा, 'भारतीय क्रान्तिकारियों में यहाँ सोई हुई औरत अकेली मर्द है'।

बिहार—जगदीशपुर (आरा) में वहाँ के ज़मींदार कुवँर सिंह ने 1857 ई. के विद्रोह के समय, विद्रोह का झण्डा फहराया। युद्ध में जख्मी हो जाने के कारण 26 अप्रैल, 1858 को उनकी मृत्यु हो गई।

फैजाबाद—1857 ई. के विद्रोह को मौलवी अहमदुल्ला ने अपना नेतृत्व प्रदान किया। अहमदुल्ला के बारे में अंग्रेज़ो ने कहा कि 'अदम्य साहस के गुणों से परिपूर्ण दृढ़ संकल्प वाले व्यक्ति तथा विद्रोहियों में सर्वोतम सैनिक है।' अहमदुल्ला की गतिविधियों से अंग्रेज़ इतने चिंतित थे कि उन्होंने इन्हें पकड़ने के लिए रु. 50,000 नकद इनाम घोषित किया। 5 जून, 1858 को रुहेलखण्ड की सीमा पर पोवायाँ में इनकी गोली मारकर हत्या कर दी गई।

असम—1857 ई. के विद्रोह के समय वहाँ के दीवान मनीराम दत्त ने वहाँ के अतिम राजा के पोते कंदेपेश्वर सिह को राजा घोषित कर विद्रोह की शुरूआत की। शीघ्र ही विद्रोह विफल हुआ मनीराम को फाँसी दे दी गई।

कोटा (राजस्थान)—एक भारतीय सैन्य टुकड़ी ने विद्रोह कर ब्रिटिश एजेण्ट मेजर बर्टन की हत्या कर विद्रोह किया, लेकिन विद्रोह को कुचल दिया गया।

पंजाब—इसका अधिकांश हिस्सा विद्रोह से अलग रहा, में 9वीं अनियमित सेना (घुड़सवार) के वजीर खाँ ने अजनाला में विद्रोह किया। कुल्लू में राणा प्रताप सिंह और वीर सिंह ने विद्रोह का नेतृत्व किया, लेकिन शीघ्र ही इन सबको फाँसी दे दी गई।

दक्षिण भारत—इसका अधिकांश हिस्सा विद्रोह के समय शांत था। सतारा और कोल्हापुर में 1857 ई. के विद्रोह का कुछ प्रभाव देखने को मिला। सतारा में रंगोजी बापूजी गुप्ते ने विद्रोह को नेतृत्व प्रदान किया गया। बंगाल, पंजाब रजपूताना, पटियाला, जींद, हैदराबाद, मद्रास आदि। ऐसे क्षेत्र थे, जहाँ पर विद्रोह नहीं पनप सका। यहाँ के शासको ने विद्रोह को कुचलने में अंग्रेज़ी सरकार की मदद भी की।

ग्वालियर—पतन के बाद रामचन्द्र पाण्डुरंग (तात्या टोपे) अप्रैल 1859 में नेपाल चलें गए, जहाँ पर एक जमींदार मित्र मानसिंह के विश्वासघात के कारण पकड़े गए तथा 18 अप्रैल,1859 को फाँसी पर लटका दिए गए।

तालिका 19.1: 1857 ई. के विद्रोह के बारे में इतिहासकारों के मत

मत	इतिहासकार
1857 ई. का विद्रोह स्वतंत्रता संग्राम नहीं था।	आर सी मजूमदार
यह स्वतंत्रता संग्राम था।	डॉ. ईश्वरी प्रसाद
यह जनक्रांति थी।	डॉ. रामविलास शर्मा
यह राष्ट्रीय विद्रोह था।	बेंजामिन डिजरायली
यह ईसाइयों के विरुद्ध एक धर्मयुद्ध था।	एल आर रीज
यह सभ्यता एवं बर्बरता का संघर्ष था।	टी आर होम्ज
विद्रोह राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिए सुनियोजित युद्ध था।	वी डी सावरकर और अशोक मेहता

विद्रोह की असफलता के कारण (Causes for Failure of the Revolt)

समन्वय एवं नेतृत्व का अभाव

विद्रोह के विभिन्न केंद्रो में परस्पर समन्वय तथा केंद्रीय संगठन का अभाव था। किसी स्थान की विजय कर लेने के बाद उनके पास आगे के लिए कोई निश्चित योजना नहीं थी। मुगल बहादुरशाह द्वितीय को प्रतीक के रूप में नेतृत्व सौंपा गया था, लेकिन उनकी आयु इतनी अधिक थी कि वे विद्रोह को दिशा नहीं दे सके।

सीमित क्षेत्र तथा राष्ट्रीय भावना का अभाव

देश का एक बहुत बड़ा भाग बंगाल, कश्मीर, पंजाब, उड़ीसा, दक्षिण भारत इससे अछूता रहा था। विद्रोह का क्षेत्र सीमित होने से दबाने में अंग्रेज़ो को असानी हुई। इस विद्रोह में राष्ट्रीय भावना का पूर्णतया अभाव था, क्योंकि भारत के सभी वर्गो का सहयोग इस विद्रोह को नहीं मिल सका।

देशी राजाओं द्वारा अंग्रेज़ों का साथ देना

विद्रोह के दौरान अनेक देशी राजाओं ने अंग्रेज़ों का साथ दिया। सिखों एवं गोरखों ने कई जगह इस विद्रोह में अंग्रेज़ों का साथ दिया। कश्मीर में गुलाब सिंह ने अंग्रेज़ों का साथ दिया। सिंधिया का एक मंत्री दिनकर राव, हैदराबाद के वजीर सर सालार जंग, भोपाल की बेगम तथा नेपाल के मंत्री जंगबहादुर ने विद्रोह को दबाने में अंग्रेज़ों की सहायता की। पटियाला, जींद, ग्वालियर एवं हैदराबाद के राजाओं ने विद्रोह को दबाने में सहायता की।

निश्चित उद्देश्य का अभाव

विद्रोह में शामिल होने वाले विभिन्न नेताओं के अपने-अपने हित थे। उनके सम्मुख कोई निश्चित उद्देश्य नहीं था। ब्रिटिश साम्राज्य का विरोध नकारात्मक ही था। इसमें कोई रचानात्मक विचाराधारा तथा भविष्य के लिए काई योजना नहीं थीं।

जनसाधारण के व्यापक समर्थन का अभाव

विद्रोहियों का जनता की सहानुभूति प्राप्त होने के बावजूद भी पूरा देश उनके साथ नहीं था। शिक्षित लोग, व्यापारी भारतीय शासक न केवल उनका समर्थन कर रहे थे, बल्कि अंग्रेज़ो का सहयोग भी प्रदान कर रहे थे। अंग्रेज़ों के पास कुशल प्रशासकों और सैन्य अधिकारियों का होना अंग्रेज़ों को विद्रोह के समय निल, निकल्सन, आउट्रम,लॉरन्स, हैवलॉक, ह्यूरोज और कैम्पबेल जैसे सैन्य अधिकारियों की सेवाएँ प्राप्त हुई ,जिन्हें कई युद्धों का अनुभव था, जिन्होंनें विद्रोह को दबाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की।

विद्रोह के परिणाम (Results of Revolt)

यद्यपि 1857 ई. का विद्रोह असफल रहा, लेकिन अपनी विफलता में भी इसने महान् उद्देश्य की प्राप्ति की। वास्तव में यह उस आंदोलन का प्रेरणा स्रोत बन गया, जिसने वह कर दिखाया जो विद्रोह नहीं कर सका। 1857 ई. की क्रांति के पश्चात् ब्रिटिश नीतियों एवं व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन किए गए।

सत्ता परिवर्तन

क्रांति के पश्चात् भारत में सत्ता कंपनी के हाथ से निकलकर ब्रिटिश क्राउन के अधीन चली गई। इसके लिए भारत शासन अधिनियम, 1858 पारित किया गया। इस अधिनियम क अनुसार, अब भारत का शासन ब्रिटिश साम्राज्ञी की ओर से भारत के राज्य सचिव का चलाना था, जिसकी सहायता के लिए 15 सदस्यों की भारत परिषद् या इंडिया कांउसिल का गठन किया गया, जिसका प्रमुख भारत के सचिव को बनाया गया।

प्रशासनिक परिवर्तन

1857 ई. के विद्रोह के पश्चात् अंग्रेज़ों ने भी बदलाव किया। विद्रोह का अंग्रेज़ों ने एक कारण यह माना था। कंपनी के पास भारतीयों की इच्छा जानने का कोई तरीका नहीं था। इसी को दूर करने के लिए 1861 ई. मे भारत परिषद् अधिनियम के अंतर्गत तीन भारतीयों को विधानपरिषद् में नियुक्त किया गया। इस विद्रोह के पश्चात सेना में भी सुधार किया गया तथा सेना के पुनर्गठन के लिए पील कमीशन का गठन यिका गया, जिसके सुझावों के आधार पर युरोपीय तथा भारतीयों में 1:2 का अनुपात निश्चित किया गया (बम्बई तथा मद्रास प्रेसिडेन्सी में यह अनुपात 1:3 का था।) विद्रोह से पूर्व यह अनुपात 1:5 का था।

देसी राजाओं के प्रति नीति में परिवर्तन

विद्रोह के पश्चात् देसी राजाओं की अधीनस्थ स्थिति एवं ब्रिटिश परम सत्ता की अवधारणा को औपचारिक रूप स्थापित किया गया। अक्टूबर 1858 ई. में महारानी विक्टोरिया द्वारा जारी किए गए घोषणा-पत्र में यह कहा गया कि ब्रिटिश सरकार भारतीय रियासतों को साम्राज्य में नहीं मिलाएगी और पहले से चले आ रहे समझौते का सम्मान करेगी। ब्रिटिश सरकार ने डलहौज़ी की हड़पने की नीति को छोड़ दिया और भारतीय नरेशों को गोद लेने का अधिकार वापस कर दिया।

ज़मींदारों के प्रति नीति

ज़मींदारों को बनाए रखने की नीति अपनाई गई एवं उन्हें पुन: स्थापित किया गया। उन्हें आश्वस्त करने के लिए स्वयं कैनिंग ने 1858 ई. में अवध जाकर विद्रोह में हिस्सा नहीं लेने वालों को सनद प्रदान की तथा इनाम बाँटे।

तालिका 19.2: 1857 ई. के विद्रोह से संबंधित प्रमुख पुस्तकें एवं उसके3 लेखक

पुस्तकें	लेखक
फर्स्ट वार ऑफ इण्यिन इण्डिपेंडेन्स,1857	वी डी सावरकर
द पीजेंण्ट एण्ड द राज	एरिक स्टोक्स
द ग्रेट रिबेलियन	अशोक मेहता
सिपॉय म्यूटिनी एण्ड म्यूटिनी	आर सी मजूमदार
हिस्ट्री ऑफ इण्यिन म्यूटिनी	टी आर होम्स
सिविल रिबेलियन इन द इण्यिन म्यूटिनी	एस बी चौधरी
सिपाय म्यूटिनी,1857	एस पी चट्टोपाध्यय
द हिस्ट्री ऑफ सिपाय वार इन इंडिया	जे. डब्ल्यू. के.
हिस्ट्री ऑफ इण्डियन म्यूटिनी	मालेसन
द फर्स्ट वार ऑफ इण्डियन इण्डिपेन्डेन्स, 1857-59	मार्क्स एवं एंजल्स

विद्रोह का स्वरूप

इतिहासकारों ने विद्रोह के स्वरूप के बारे में मतभेद है। यह मतभेद मुख्यत: तीन बिन्दुओं पर आधारित है—सैनिक विद्रोह, एक राष्ट्रीय संघर्ष या भारतीय स्वतंत्रता का प्रथम संघर्ष, सामंतीय असंतोष और उस पर प्रतिक्रिया। किसी ने इसे सैनिक विद्रोह माना है तो किसी ने स्थानीय राजाओं एवं सामंतों की अपने हित के लिए प्रतिक्रिया और किसी ने इसे स्वतंत्रता के लिए हुए प्रथम संघर्ष के रूप में देखा है। निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि 1857 का विद्रोह नि:संदेह साम्राज्यवाद विरोधी और राष्ट्रवादी था क्योंकि इसमें हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया था और दोनों का एक ही लक्ष्य साम्राज्यवादियों को उखाड़ फेंकना था, लेकिन विद्रोहियों में राष्ट्रीयता की संकल्पना का पूर्ण अभाव था।

अध्याय सार संग्रह

- बहादुर शाह दिल्ली में प्रतीकात्मक नेता था। वास्तविक नेतृत्व सैनिकों की एक परिषद के हाथों में था, जिसका प्रधान बख्त खाँ था।
- 1857 के विद्रोह के समय भारत का गवर्नर जनरल लॉर्ड केनिंग था।
- यह विद्रोह सत्ता पर अधिकार के बाद लागू किए जाने वाले किसी सामाजिक विकल्प से रहित था।
- 1857 के विद्रोह में पंजाब, राजपूताना, हैदराबाद और मद्रास के शासकों ने बिल्कुल हिस्सा नहीं लिया।
- विद्रोह की असफलता के कई कारण थे, जिसमें प्रमुख था एकता, संगठन और साधनों की कमी।
- बंगाल के जमींदारों ने विद्रोह को कुचलने के लिए अंग्रेज़ों की मदद की थी।
- वी.डी. सावरकर ने अपनी पुस्तक '*भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम*' के माध्यम से इस धारणा को जन्म दिया कि 1857 का विद्रोह एक सुनियोजित राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम था।
- 29 मार्च, 1857 को मंगल पाण्डे ने बैरकपुर छावनी में अंग्रेज अधिकारी की हत्या की।
- 1857 के दौरान लखनऊ में विद्रोह का नेतृत्व बेगम महल ने किया था।
- जॉन ब्रूस नार्टन के अनुसार '1857 का विद्रोह सैनिक विद्रोह न होकर नागरिक विद्रोह था।'
- 1857 के विद्रोह की असफलता का मुख्य कारण योग्य नेतृत्व एवं सामंजस्य का अभाव था।
- 1857 के विद्रोह के दौरान बिहार में एक छोटी रियासत जगदीशपुर के ज़मींदार कुंवर सिंह ने विद्रोह का नेतृत्व किया।
- झांसी में गंगाधर राव की विधवा रानी लक्ष्मीबाई ने विद्रोह का नेतृत्व किया।
- राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन का प्रेरणा स्रोत बनकर 1857 ई. के विद्रोह में उस उपलब्धि को प्राप्त किया, जो अन्य विद्रोहों के लिए संभव नहीं थी।
- विद्रोह को कुचल देने के बाद अंग्रेजों ने भारत में एक व्यवस्थित शासन प्रणाली स्थापित करने के लिए भारत सरकार अधिनियम 1858 पारित किया।
- 1857 का विद्रोह राष्ट्रवादी था क्योंकि इसमें हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया।